भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
आर्थिक कार्य विभाग
(विदेशी ऋण प्रबंधन एकक)

प्रेस विज्ञप्ति

विषय : दिसंबर 2016 के अंत में भारत का विदेशी ऋण ।

वित्त मंत्रालय का आर्थिक कार्य विभाग प्रत्येक वर्ष सितंबर और दिसंबर को समाप्त तिमाहियों के लिए भारत के विदेशी ऋण के त्रैमासिक आंकड़ों को संकलित और जारी करता है । यह प्रेस विज्ञप्ति दिसंबर 2016 के अंत में भारत के विदेशी ऋण से संबंधित है ।

(i) दिसंबर 2016 के अंत में भारत का विदेशी ऋण स्टॉक मार्च 2016 के अंत के स्तर की तुलना में 29.0 बिलियन अमरीकी डॉलर (6.0 प्रतिशत) कम होकर 456.1 बिलियन अमरीकी डॉलर रह गया। इस अवधि के दौरान विदेशी ऋण विशेषकर दीर्घावधिक विदेशी ऋण में कमी, एफसीएनआर (बी) खाते से धनराशि निकाले जाने के कारण एनआरआई जमा राशि में गिरावट तथा वाणिज्यिक बैंक ऋणों एवं प्रतिभूतिकृत उधारियों दोनों में कमी, होने से वाणिज्यिक उधारों में कमी आने के कारण हुआ है। आनुक्रमिक आधार पर, सितंबर अंत 2016 के स्तर की तुलना में दिसंबर अंत 2016 में कुल विदेशी ऋण में 28.1 बिलियन अमरीकी डॉलर (5.8 प्रतिशत) की कमी हुई है।

(ii) भारत के विदेशी ऋण का परिपक्कवता पैटर्न दीर्घावधिक उधार की प्रमुखता को सूचित करता है। दिसंबर 2016 के अंत में, दीर्घावधिक विदेशी ऋण भारत के कुल विदेशी ऋण का 81.6 प्रतिशत था जबकि शेष 18.4 प्रतिशत अल्पावधिक विदेशी ऋण था।

(iii) दिसंबर अंत 2016 में दीर्घावधिक ऋण 372.2 बिलियन अमरीकी डॉलर था जो मार्चांत 2016 के स्तर की तुलना में 29.4 बिलियन अमरीकी डॉलर (7.3 प्रतिशत) की कमी सूचित करता है जबकि इसी अवधि के दौरान अल्पावधिक विदेशी ऋण में 0.5 प्रतिशत की मामूली वृद्धि हुई और यह 83.8 बिलियन अमरीकी डॉलर के स्तर पर पहुंच गया।

(iv) मूल्यन लाभ (भारतीय रुपये तथा अधिकांश अन्य प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमरीकी डॉलर की मूल्यवृद्धि) 7.3 बिलियन अमरीकी डॉलर था। इसका अर्थ यह है कि यदि मूल्यन प्रभाव को छोड़ दिया जाए तो मार्चांत 2016 के स्तर की तुलना में दिसंबर अंत 2016 में ऋण की राशि अपेक्षाकृत कम स्तर पर 21.7 बिलियन अमरीकी डॉलर होती।

(v) दिसंबर 2016 के अंत में कुल विदेशी ऋण में सरकारी (सॉवरन) और गैर-सरकारी ऋण की हिस्सेदारी क्रमश: 19.6 प्रतिशत और 80.4 प्रतिशत थी।

(vi) दिसंबर अंत 2016 में भारत के कुल विदेशी ऋण स्टॉक में अमरीकी डॉलर में मूल्यवर्गित ऋण का हिस्सा 54.7 प्रतिशत पर सर्वाधिक बना रहा जिसके बाद भारतीय रुपया (31.1 प्रतिशत), एसडीआर (5.9 प्रतिशत), जापानी येन (4.4 प्रतिशत), यूरो (2.7 प्रतिशत) पाउंड स्टर्लिंग (0.7 प्रतिशत), तथा अन्य (0.5 प्रतिशत) का स्थान आता है।

....2/-

Vii. भारत के विदेशी ऋण से संबंधित अनेक प्रमुख संकेतकों से मार्चांत 2016 की तुलना में दिसंबर अंत 2016 में सुधार प्रदर्शित होता है। इसके अतिरिक्त, इस अवधि के दौरान कुल विदेशी ऋण में 6.0 प्रतिशत की कमी आई है, विदेशी ऋण के लिए विदेशी मुद्रा का कवर 74.3 प्रतिशत से बढ़कर 78.7 प्रतिशत हो गया है तथा रियायती ऋण और कुल विदेशी ऋण का अनुपात 9.0 प्रतिशत से बढ़कर 9.2 प्रतिशत हो गया है। हालांकि, व्यापार संबंधित ऋण में वृद्धि के कारण इस अवधि के दौरान कुल ऋण में अल्पावधिक ऋण (मूल परिपक्वता) की हिस्सेदारी 17.2 प्रतिशत से बढ़कर 18.4 प्रतिशत हो गई है तथा कुल विदेशी ऋण में अल्पावधिक ऋण (अवशिष्ट परिवक्वता) की हिस्सेदारी 42.6 प्रतिशत से घटकर 41.4 प्रतिशत हो गई है। जबकि इस अवधि के दौरान विदेशी मुद्रा भंडार में अल्पावधिक ऋण (मूल परिपक्वता) की हिस्सेदारी 23.1 प्रतिशत से मामूली बढ़कर 23.4 प्रतिशत हो गई है, वहीं विदेशी मुद्रा भंडार में अल्पावधिक ऋण (अवशिष्ट परिपक्वता) की हिस्सेदारी 57.4 प्रतिशत से घटकर 52.6 प्रतिशत हो गई।

Viii विदेशी ऋण की स्थिति के संबंध में विभिन्न देशों की तुलना से यह ज्ञात होता है कि भारत अभी भी कम असुरक्षित देशों की श्रेणी में बना हुआ है। भारत के प्रमुख ऋण संकेतक काफी हद तक अन्य ऋणी विकासशील देशों के अनुरूप हैं। वर्ष 2015 में शीर्षस्थ 20 विकासशील ऋणी देशों में, सकल राष्ट्रीय आय (जीएनआई) में भारत का विदेशी ऋण स्टॉक अनुपात नीचे से पांचवां 23.4 प्रतिशत था तथा विदेशी ऋण में विदेशी मुद्रा के प्रारक्षित भंडार के द्वारा प्रदत्त कवर के संदर्भ में, 69.7 प्रतिशत के साथ भारत का ऊपर से छठा स्थान था। चीन के कुल विदेशी ऋण में अल्पावधिक ऋण की उच्च हिस्सेदारी जो वर्ष 2016 की प्रत्येक तिमाही में निरंतर बढ़ती रही है, की तुलना में भारत की अल्पावधिक ऋण की हिस्सेदारी कम रही है तथा इसमें निरंतर गिरावट का रूख बना हुआ है। 2016 की तीसरी तिमाही (सितंबर अंत) में भारत के कुल विदेशी ऋण में अल्पावधिक ऋण की हिस्सेदारी 16.8 प्रतिशत और चीन के कुल विदेशी ऋण में अल्पाविधक ऋण की हिस्सेदारी 55.4 प्रतिशत थी।